विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2018

विश्व के बहाईयों को

परमप्रिय मित्रो,

‘आशीर्वादित सौन्दर्य’ के जन्मोत्सव की द्विशताब्दी को रेखांकित करने वाले स्मरणीय कार्यक्रमों की चिरस्थायी प्रभा के वातावरण में हम आपका अभिनंदन करते हैं। तत्पश्चात जो कुछ भी प्रतिफलित हुआ है उसपर विचार करने से हम यह देखते हैं कि आज विश्व भर का बहाई समुदाय वैसा नहीं है जैसा कि वह वर्तमान ‘योजना’ के प्रथम छः चक्रों के समारंभ के समय था। अपने ध्येय के प्रति वह पहले की अपेक्षा हमेशा से अधिक जागरूक हो चुका है। मित्रों और परिचितों को अपने सामुदायिक जीवन के संसर्ग में लाने; अपने पास-पड़ोस के लोगों और गांवों को एकीकृत प्रयासों में एकजुट हो जाने की प्रेरणा देने; यह अभिव्यक्त करने में कि आध्यात्मिक सच्चाइयों को किस तरह स्थायित्वपूर्ण व्यावहारिक क्रिया का रूप दिया जा सकता है; और सबसे बढ़कर, न केवल उन शिक्षाओं के बारे में जिनसे एक नए विश्व का निर्माण हो सकेगा बल्कि ‘जिसने’ वे शिक्षाएं दीं, अर्थात बहाउल्लाह, के बारे में भी बातचीत करने की दिशा में बहाई समुदाय की क्षमता में अभूतपूर्व तेजी से विकास का अनुभव हुआ है। ‘उनके’ जीवन और ‘उनके’ द्वारा सहे गए कष्टों के बारे में असंख्य वयस्कों, युवाओं और बच्चों के मुख से कहे गए वृतान्तों ने अनगिनत हृदयों को अभिभूत करके रख दिया। उनमें से कुछ लोगों ने स्वयं ‘उनके’ धर्म के बारे में और अधिक जानने की तत्परता दिखाई। अन्य लोगों ने सहयोग के वचन दिए। और भी अनेक ग्रहणशील लोग अपनी आस्था प्रकट करने के लिए प्रेरित हुए।

प्रगति का एक प्रभावी संकेतक यह था कि असंख्य जगहों पर यह स्पष्ट हो गया कि प्रभुधर्म राष्ट्रीय स्तर पर अपनी गुमनामी के अंधकार से बाहर आ चुका है। शासन-सूत्र का संचालन करने वाले अनेक नेताओं और प्रबुद्ध लोगों ने सार्वजनिक रूप से कहा--और कई बार निजी तौर पर इस बात पर जोर दिया--कि आज की दुनिया को बहाउल्लाह की संकल्पना की जरूरत है और यह कि बहाईयों द्वारा किए जा रहे प्रयास प्रशंसनीय हैं और उनका विस्तार किया जाना चाहिए। हमें यह देखकर खुशी हुई कि बहाउल्लाह के प्रति सम्मान प्रकट करने और ‘उनके’ जीवन का समारोह मनाने की उत्कंठा केवल बहाईयों में नहीं थी--बहाई समुदाय से बाहर के कुछ लोगों द्वारा भी विशेष सम्मिलनों का प्रायोजन किया गया। ऐसी जगहों में जहां अभी प्रभुधर्म के प्रति शत्रुता का वातावरण है, वहां भी मित्रगण निडर बने रहे; उन्होंने अद्भुत लोचपूर्णता का परिचय दिया, उन्होंने अपने देशवासियों को स्वयं ही सत्य को परखने के लिए प्रोत्साहित किया, और अनेक लोग

समारोहों में सहर्ष शामिल हुए। द्विशताब्दी समारोह ने प्रकट रूप से कलात्मक अभिव्यक्तियों की असीम अभिव्यंजना को भी बढ़ावा दिया जो कि उस अभिव्यक्ति को जन्म देने वाले प्रेम के स्रोत का एक भव्य प्रमाण था। इस अवसर पर बहाई समुदाय द्वारा समग्र रूप से अपनाए गए दृष्टिकोण की प्रकृति इस बात को पुष्ट करती थी कि विश्वव्यापी 'योजनाओं' की वर्तमान श्रृंखलाओं के आरंभ होने के दो दशकों से भी अधिक समय में अभी कितना कुछ सीखा-समझा गया है। व्यक्तिगत धर्मानुयायी ने पहल की, समुदाय सामूहिक प्रयास के साथ उठ खड़ा हुआ, और मित्रों ने संस्थाओं द्वारा तैयार की गई योजनाओं में सुव्यवस्थित रूप से अपनी रचनात्मक ऊर्जा लगाई। दो शताब्दियों की समाप्ति को रेखांकित करने वाले महत्वपूर्ण वार्षिकोत्सव ने, आने वाली सदी के लिए समुदायों के निर्माण के कार्य के लिए प्रबल उत्प्रेरण प्रदान किया। दूसरी द्विशताब्दी तक अग्रसर इस अवधि में, प्रथम के दौरान इतने प्रेम से बोए गए प्रत्येक बीज को फलीभूत होने के लिये धैर्यपूर्वक पोषित किए जाने की जरूरत है।

वर्तमान 'योजना' के इन दो वर्षों में, हालांकि स्वाभाविक रूप से प्रत्येक देश में समान रूप से प्रगति नहीं हुई है लेकिन गहन विकास कार्यक्रमों की संख्या, वर्तमान विश्वव्यापी प्रयास में अभिकल्पित, पांच हजार की संख्या के आधे पर पहुंच रही है, और यह संख्या जिस दर से बढ़ रही है उसमें सतत वृद्धि हो रही है। और भी अधिक गहनता से देखने पर, इस बात के भी आशाजनक संकेत हैं कि व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं की शक्तियां और क्षमताएं किस तरह प्रकट हो रही हैं। सभी जगहों के धर्मानुयायियों के लिए, द्विशताब्दी समारोह के अनुभव ने यह प्रदर्शित किया है कि अपने इर्द-गिर्द के लोगों के साथ रोजमर्रा के उनके अनेक कार्य-व्यवहार, शिक्षण की चेतना से अनुप्राणित हो सकते हैं। और हजारों गांवों और पास-पड़ोसों में जैसे-जैसे कार्य में गति आती जा रही है, वैसे-वैसे उनमें से प्रत्येक में, जीवन्त सामुदायिक जीवन की जड़ें गहराती जा रही हैं। ऐसे समुदाय-समूहों की संख्या में अच्छी-खासी वृद्धि हुई है जहां गतिविधि के इस प्रतिमान को ज्यादा से ज्यादा स्थानों में विस्तृत करने की प्रणाली अच्छी तरह संस्थापित की जाने लगी है- जिसने मित्रों को, विकास की सततता में, मील के तीसरे पत्थर को पार करने के योग्य बनाया है। और बहाई विश्व की इस अग्रणी सीख, खास तौर पर बहाउल्लाह की संकल्पना की ओर लोगों के अभिगमन की सीख ने जहाँ न केवल लोग बड़ी संख्या में बहाई गतिविधियों के सतत व्यापक होते दायरे में शामिल हो रहे हैं, बल्कि मित्रगण अब यह भी सीख रहे हैं कि किस तरह बड़े समूह 'महानतम नाम' के समुदाय के साथ अपनी पहचान बनाते हैं। हम देखते हैं कि ऐसी जगहों पर प्रभुधर्म के शैक्षणिक प्रयास और अधिक औपचारिक रूप ग्रहण करने लगते हैं क्योंकि साल-दर-साल बच्चे निर्बाध रूप से एक ग्रेड से दूसरे ग्रेड में आगे बढ़ते रहते हैं और किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण का कार्यक्रम दृढ़ता से एक स्तर से दूसरे स्तर पर पहुंच जाता है। इन स्थानों में, प्रशिक्षण संस्थान यह सुनिश्चित करना सीख रहा है कि निरंतर बढ़ती हुई संख्या में

बच्चों एवं किशोरों के आध्यात्मिक एवं नैतिक चरित्र-निर्माण के लिए पर्याप्त मानव संसाधन तैयार किए जा रहे हैं। लोगों की संस्कृति में इन मूल गतिविधियों में भागीदारी इस तरह समाहित होती जा रही है कि उसे समुदाय के जीवन का एक अभिन्न पहलू समझा जाने लगा है। अपने विकास का जिम्मा स्वयं उठाने की भावना से सम्पन्न लोगों में एक नई जीवन्तता का जन्म हो रहा है और समाज की निष्क्रियता उत्पन्न करने वाली शक्तियों को वे बेअसर कर रहे हैं। भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति की संभावना अब आकार लेने लगी है। सामाजिक यथार्थ में बदलाव आने लगा है।

प्यारे मित्रो, यह सचमुच 'परम प्रियतम' के प्रति आभार प्रकट करने की बेला है। प्रोत्साहित होने के बहुत अधिक कारण हैं। लेकिन हमारे सामने जो अपार दायित्व शेष हैं हम उनसे भली-भांति अवगत हैं। आधारभूत रूप से, जैसाकि हमने पहले भी संकेत दिया है, जरूरी है कि सैकड़ों समुदाय-समूहों में ऐसे धर्मानुयायियों की बढ़ती हुई टोलियां तैयार होनी चाहिए जो, अपने इर्द-गिर्द के मित्रों के साथ मिलकर, विकास को पोषण प्रदान करने और क्षमता-निर्माण के कार्य पर निरंतर ध्यान केन्द्रित कर सकें, और जो अपनी योग्यता एवं अनुशासन द्वारा क्रिया की समीक्षा करने और अपने अनुभव से सीखने की विशिष्टता रखते हों। प्रत्येक स्थान में - केवल समुदाय-समूह स्तर पर ही नहीं बल्कि पास-पड़ोसों और गांवों में भी -- व्यक्तियों का एक सतत व्यापक होता हुआ 'नाभिकीय बिंदु' तैयार करना और उनका साथ निभाना अपने आप में एक विकट चुनौती का कार्य भी है और महत्वपूर्ण रूप से आवश्यक भी। लेकिन जहां कहीं भी ऐसा हो रहा है वहां के परिणामों के लिये अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है।

हम यह देखकर आश्वस्त हैं कि प्रभुधर्म की संस्थाएं इस परम आवश्यकता पर प्रमुखता से विचार करती हैं और प्रगति से प्राप्त अंतर्दृष्टियों को व्यापक रूप से लागू करने योग्य बनाने के लिए वे प्रभावी तौर-तरीके तैयार करने में निरत हैं। इसके साथ ही, राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय संस्थाएं अपने वृहत्तर अनुभव से सम्पन्न होकर अधिक व्यापक दृष्टिकोण अपना रही हैं। वे समुदाय के विकास के सभी पहलुओं में संलग्न हो रही हैं और वे समुदाय के औपचारिक सदस्यों से भी परे सभी लोगों के कल्याण से वास्ता रखती हैं। लोगों के विकास की दिशा में संस्थान-प्रक्रिया के गहन अभिप्रायों के प्रति सजग, वे इस बात पर खास ध्यान देती हैं कि प्रशिक्षण संस्थान को कैसे मजबूत बनाया जाए। 'योजना' की आवश्यक बातों पर समुदाय का ध्यान केन्द्रित किए रखने की जरूरत को वे सतत रूप से समझती हैं और निरंतर व्यापक होते हुए मित्रों के दायरे को एकता के उच्च से उच्चतर स्तरों तक पहुँचने का आह्वान करती हैं। अपनी प्रशासनिक एवं वित्तीय प्रणालियों को बेहतर से बेहतर बनाने की जिम्मेदारी का वे निष्ठापूर्वक ध्यान रखती हैं ताकि विस्तार और सुगठन के कार्य में समुचित सहायता दी जा सके। इन सब में, अंततः वे समुदाय के अंतर्गत प्रबल आध्यात्मिक शक्तियों को प्रकट करने वाली अनुकूल स्थितियों के सृजन में प्रवृत्त रहते हैं।

समुदाय-निर्माण के कार्य में गहनता आने के साथ-साथ, मित्रगण अपने आस-पास के समाज की दशाओं को बेहतर बनाने के लिए अपनी नव-विकसित क्षमताओं का उपयोग करने लगे हैं, इस कार्य में उनका उत्साह दिव्य शिक्षाओं के अध्ययन से संदीप्त होता है। अल्पकालिक प्रोजेक्टों की संख्या बहुत बढ़ी है, औपचारिक कार्यक्रमों के दायरे में विस्तार हुआ है और शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि तथा अन्य क्षेत्रों में अब और भी अधिक बहाई-प्रेरित विकास संस्थाएं कार्यरत हैं। इन सबके परिणामस्वरूप लोगों के व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में जो रूपांतरण दिखाई देने लगा है उसे बहाउल्लाह के धर्म की समाज-निर्माणकारी शक्ति के अचूक उद्वेलन के रूप में समझा जा सकता है। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि सामाजिक क्रिया के ऐसे ही उदाहरणों से--चाहे वे सरल हों या जटिल, नियत काल या दीर्घकालिक--समाज के बारे में मौजूदा परिसंवादों में भाग लेने के अपने प्रयासों में बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के कार्यालय निरंतर प्रेरणा ग्रहण करते आ रहे हैं। प्रभुधर्म के लिए प्रयास का यह एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसका अच्छा विकास हुआ है। राष्ट्रीय स्तर पर, समाज के लिए सार्थक परिसंवादों--जैसे अन्य विषयों के साथ ही स्त्री-पुरुष की समानता, प्रवासन और एकीकरण, सामाजिक रूपांतरण में युवाओं की भूमिका, और धार्मिक सह-अस्तित्व--में पहले से अधिक आत्मविश्वास, सक्षमता और अंतर्दृष्टि के साथ योगदान दिया जा रहा है। और सभी आयुवर्ग और पृष्ठभूमियों के धर्मानुयायी जहां कहीं भी रहते, काम करते, या अध्ययन करते हैं, वे अपने आस-पास के लोगों का ध्यान बहाउल्लाह के विराट 'प्रकटीकरण' से रूपायित एक आदर्श परिप्रेक्ष्य की ओर आकर्षित करते हुए, विशिष्ट परिसंवादों में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

जिन विविध अवसरों पर ये परिसंवाद प्रस्तुत किए गए हैं उनमें प्रभुधर्म के दृष्टिकोण को समृद्ध करने में 'वर्ल्ड वाइड वेब' पर इसकी आधिकारिक मौजूदगी से काफी प्रभाव पड़ा है, जो कि अनेक राष्ट्रीय बहाई वेबसाइटें आरंभ किए जाने और 'बहाई.ऑर्ग' से जुड़ी अन्य अनेक साइटों के कारण और भी विस्तृत हो गई है। प्रभुधर्म के प्रसार और उसके संरक्षण इन दोनों ही दृष्टियों से इसका अत्यधिक महत्व है। बहाई द्विशताब्दी वेबसाइट पर प्रस्तुत एवं एक ही समय नौ भाषाओं में अपडेट की गई बहाई धर्म सम्बंधी सुव्यवस्थित विषय-सामग्री ने, कुछ ही दिनों के अंतराल में, पूरी दुनिया से विशाल संख्या में लोगों को आकर्षित किया और अब इस वेबसाइट को अलग-अलग देशों के पेजों से परिष्कृत कर दिया गया है और विविध प्रकार के समारोहों के सचित्र विवरण प्रस्तुत किए गए हैं। अब बहाई रेफरेंस लायब्रेरी साइट में एक विशिष्टता प्रस्तुत करने की योजना का काफी विकास हो चुका है जिससे 'पवित्र लेखों' के ऐसे अंशों या 'पातियों' को ऑनलाइन रूप से जारी करने की सुविधा कालान्तर में प्राप्त होगी, जिनका पहले कभी अनुवाद या प्रकाशन नहीं हुआ है। इसके साथ ही, आगामी वर्षों में, बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा के लेखों के अंग्रेजी में अनूदित नए खंडों को प्रकाशित करने की तैयारी हो रही है।

सैंटिएगो (चिली) और बैटमबैंग (कंबोडिया) में हाल ही में विश्व को समर्पित किए गए बहाई उपासना गृह अब आकर्षण के स्थायी केंद्र बनते जा रहे हैं और वे अपने समाज के लोगों को प्रभुधर्म के समस्त प्रतीकों की ओर संकेतित करने वाले प्रकाश-स्तंभ बन गए हैं। और इनकी संख्या शीघ्र बढ़ने वाली है। हमें यह घोषणा करते हुए हर्ष हो रहा है कि नॉर्टे डेल कॉसा (कोलम्बिया) के मन्दिर का लोकार्पण समारोह जुलाई में होने वाला है। उसके बाद, और भी उपासना मन्दिरों का निर्माण अब बहुत दूर नहीं है। वैनुएतू में भवन-निर्माण की अनुमति ली जा रही है। भारत तथा कांगो गणराज्य में, अत्यंत ही जटिल और दुरूह प्रक्रिया से गुजरने के बाद, अंततः हम भूमि के सफलतापूर्वक अधिग्रहण की ओर कदम बढ़ा चुके हैं। नवरूज़ पर पापुआ न्यू गायना के प्रथम राष्ट्रीय मशरिकुल-अजकार की डिजाइन के अवलोकन से उत्पन्न हर्ष अभी समाप्त भी नहीं हो पाया था कि केन्या के स्थानीय उपासना मन्दिर का डिजाइन भी प्रकट कर दिया गया। इसी दौरान, हमें पूरी उम्मीद है कि मशरिकुल-अज़कार की संस्था के बारे में हमारे 'शोध विभाग' द्वारा हाल ही में जारी किया गया वक्तव्य सामुदायिक जीवन में उपासना के महत्व के बारे में मित्रों की समझ को प्रेरित करेगा। क्योंकि सेवा के अपने कार्यों में, खास तौर पर अपने नियमित भक्तिपरक सम्मिलनों में, बहाई हर जगह भविष्य के उपासना गृहों की आध्यात्मिक बुनियाद कायम कर रहे हैं।

एक-चैथाई शताब्दी के अभियान के पूरा होने में सिर्फ तीन वर्ष रह गए हैं, जिसकी शुरुआत एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित करके, 1996 में की गई थी: समूहों द्वारा प्रभुधर्म में प्रवेश की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण प्रगति। रिजवान 2021 में, बहाउल्लाह के अनुयायी एक वर्ष की एक 'योजना' का समारंभ करेंगे। संक्षिप्त, लेकिन शुभ संकेतों से भरा यह एक-वर्षीय प्रयास 'योजनाओं' की एक नई लहर को जन्म देगा जिससे प्रभुधर्म की नौका बहाई युग की तीसरी शताब्दी में पहुंच जाएगी। बारह महीनों की इस धन्य अवधि में अब्दुल-बहा के निधन की शताब्दी के विश्वव्यापी आयोजन के क्रम में बहाई विश्व केंद्र में एक विशेष सम्मिलन भी शामिल होगा जिसके लिए प्रत्येक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा और हर क्षेत्रीय बहाई परिषद के प्रतिनिधि आमंत्रित किए जाएंगे। लेकिन यह उन कार्यक्रमों की शृंखला में पहला कार्यक्रम होगा जो कि, धर्मानुयायियों को आने वाले दशकों की मांग को पूरा करने के लिए तैयार करेंगे। आगामी जनवरी में, प्रिय मास्टर के 'इच्छापत्र और वसीयतनामा' के प्रथम सार्वजनिक पाठ के सौ वर्ष पूरे हो जाएंगे और उस अवसर पर सभी महाद्वीपीय सलाहकार मंडल और प्रसार एवं संरक्षण के लिए नियुक्त सभी सहायक मंडल सदस्यों को एकत्रित करते हुए, पवित्र भूमि में एक अधिवेशन आयोजित किया जाएगा। इन दो ऐतिहासिक सम्मेलनों से निर्गत आध्यात्मिक ऊर्जा को उसके बाद प्रत्येक भूभाग में रहने वाले 'प्रभु' के मित्रों के पास ले जाया जाएगा। आगे आने वाले महीनों में, इस उद्देश्य से, विश्व-व्यापी सम्मेलनों की

एक शृंखला आयोजित की जायेगी, जो कि इस आगामी 'एक वर्षीय योजना' के उपरांत, आने वाले बहु-वर्षीय प्रयास के लिये उत्प्रेरक होगी।

इस तरह, मास्टर की 'दिव्य योजना' के प्रकटीकरण की दिशा में एक नया चरण प्रस्तुत होने वाला है। लेकिन एक रोमांचकारी एवं समीपवर्ती परिदृश्य अभी सीधे सामने खड़ा है। बाब के जन्म की द्विशताब्दी में मात्र डेढ़ वर्ष बाकी हैं। यह वह अवधि है जब हम अपने धर्म के शहीद एवं अग्रदूत की असाधारण शूरता को याद करेंगे, जिनके प्रभावशाली धर्मनेतृत्व-काल ने मानवजाति को इतिहास के एक नए युग में ला खड़ा किया। यदि अत्याचार के भाव और अनेक लोगों में ज्ञान पाने की आत्मा की पिपासा को शांत करने के लिए समाधान पाने की जो उत्कंठा है उस दृष्टि से देखें तो, दो शताब्दी के अंतराल के बावजूद वह समाज जिसमें बाब का आविर्भाव हुआ था, आज के संसार से मिलता-जुलता है। इस दो सौ वर्षीय वार्षिकोत्सव को समुचित तरीके से कैसे मनाया जाए इस पर विचार करते हुए हम यह मानते हैं कि इन समारोहों का स्वयं का एक विशेष लक्षण होगा। तथापि, हम आशा करते हैं कि गतिविधि का प्रस्फुटन अभी-अभी गुजरे द्विशताब्दी उत्सव से कम समृद्ध और कम समावेशकारी नहीं होगा। यह एक ऐसा अवसर है जिसकी उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा निस्संदेह हर समुदाय, हर घर-परिवार, हर हृदय को रहेगी।

आने वाले माह बाब के शूर-वीर अनुयायियों के जीवन के पुण्य-स्मरण का भी काल होगा--उन वीर स्त्रियों और पुरुषों को याद करने का, जिन्होंने अपनी निष्ठा को ऐसे अनुपम एवं त्यागपूर्ण कृत्यों के माध्यम से प्रकट किया था जो सदा-सदा के लिए प्रभुधर्म के इतिहास को विभूषित करते रहेंगे। निडरता, समर्पण और ईश्वर के सिवा अन्य सबसे अनासक्ति के उनके गुण उन सभी लोगों को प्रभावित करके रख देते हैं जो उनके साहसिक कार्यों के बारे में सुनते हैं। और यह भी कितना विस्मयकारी है कि शेर जैसे जांबाज इतने अधिक लोग युवावस्था में ही इतिहास में अपनी अमिट निशानी छोड़कर चले गए। आने वाली अवधि में, उनके आदर्श आस्थावानों के समस्त समूह को साहस प्रदान करें--न कि केवल युवाओं को, जिनका एक बार फिर आह्वान किया जाता है कि वे उस आंदोलन के अग्रनायक बनें जिसका उद्देश्य विश्व के रूपांतरण से कम कुछ नहीं है।

अतः यही है हमारी प्रखर, देदीप्यमान आशा। इस रिज़वान से लेकर अगली द्विशताब्दी के बीच के छः चक्रों में--वस्तुतः, वर्तमान 'योजना' की शेष तीन वर्षों की समस्त अवधि में--वही उत्कट एवं चरम प्रेम आपको भी महान कार्यों की दिशा में प्रेरित करे, जिससे दिव्य प्रकाश के प्रसार के लिए बाब के अनुयायी अनुप्राणित हुए थे। पवित्र दहलीज पर हमारी प्रार्थना है कि आपको स्वर्गिक सहायता प्राप्त हो।

विश्व न्याय मन्दिर